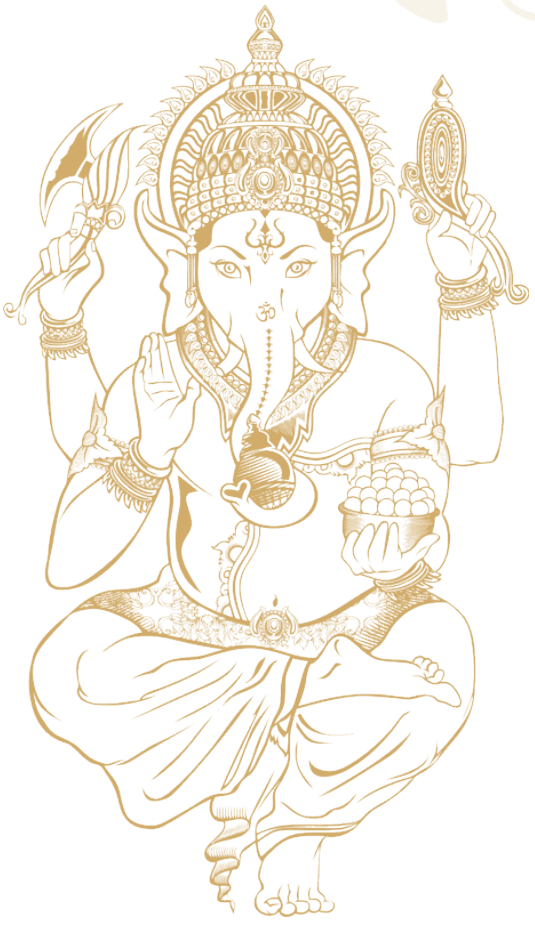

Mr. S bhargava

Ms.kaushki

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119080304

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
24/03/1995	जन्म तिथि	27/10/1994
शुक्रवार	दिन	गुरुवार
घंटे 17:17:50	जन्म समय	12:26:40 घंटे
घटी 27:51:45	जन्म समय(घटी)	15:38:36 घटी
India	देश	India
Katni	स्थान	Patna
23:47:00 उत्तर	अक्षांश	25:37:00 उत्तर
80:29:00 पूर्व	रेखांश	85:12:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:08:04	स्थानिक संस्कार	00:10:48 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:09:07	सूर्योदय	05:54:17
18:20:20	सूर्यास्त	17:11:47
23:47:36	चित्रपक्षीय अयनांश	23:47:16

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
शुक्र 12वर्ष 10मा 20दि	26:05:03	सिंह	लग्न	मक	08:54:05	शनि 16वर्ष 5मा 25दि
मंगल	09:34:44	मीन	सूर्य	तुला	09:50:22	बुध
12/02/2024	18:04:26	धनु	चंद्र	कर्क	05:05:47	23/04/2011
12/02/2031	19:22:20	कर्क व	मंगल	कर्क	18:18:23	22/04/2028
मंगल 10/07/2024	20:53:56	कुंभ	बुध व	कन्या	27:49:08	बुध 19/09/2013
राहु 29/07/2025	21:29:21	वृश्चि	गुरु	तुला	26:43:10	केतु 16/09/2014
गुरु 05/07/2026	01:45:19	कुंभ	शुक्र व	तुला	20:21:56	शुक्र 17/07/2017
शनि 13/08/2027	23:27:44	कुंभ	शनि व	कुंभ	12:02:24	सूर्य 23/05/2018
बुध 10/08/2028	12:16:05	तुला व	राहु	तुला	21:04:42	चन्द्र 23/10/2019
केतु 06/01/2029	12:16:05	मेष व	केतु	मेष	21:04:42	मंगल 19/10/2020
शुक्र 08/03/2030	05:57:40	मक	हर्ष	धनु	28:52:15	राहु 08/05/2023
सूर्य 14/07/2030	01:25:58	मक	नेप	धनु	26:57:16	गुरु 13/08/2025
चन्द्र 12/02/2031	06:41:39	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	03:14:07	शनि 22/04/2028

लग्न-चलित

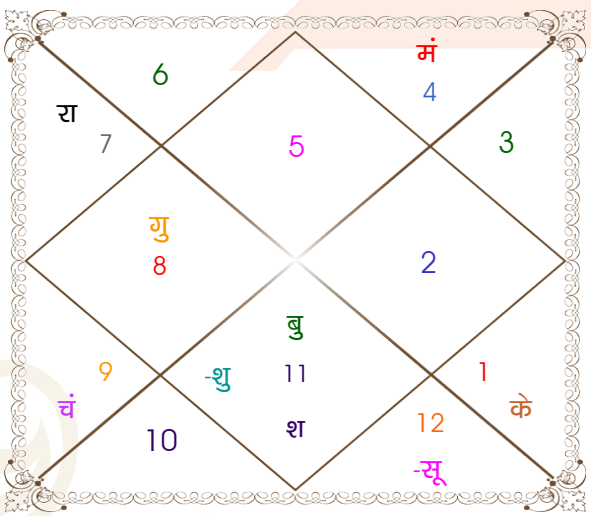

लग्न-चलित

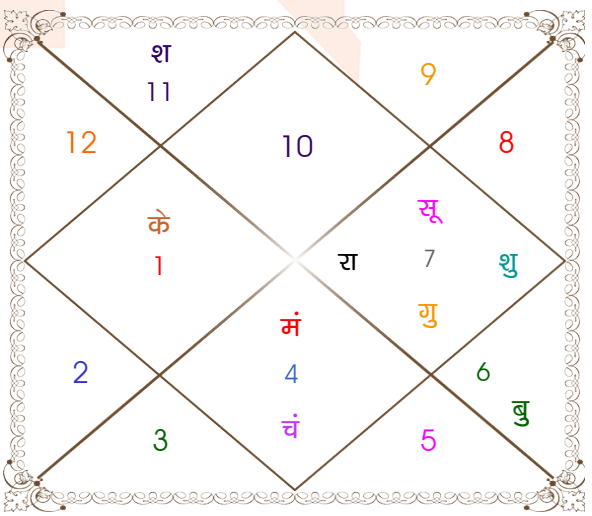

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	क्षेम	वध	3	1.50	--	भाग्य
योनि	वानर	मेष	4	0.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	चन्द्र	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	धनु	कर्क	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	11.50		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि डेणंनीप का नक्षत्र पुष्य है।

डतण` ईींतहंअं का वर्ग सर्प है तथा डेणंनीप का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण` ईींतहंअं और डेणंनीप का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण` ईींतहंअं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में द्वादश भाव में धनु, मेष तथा कर्क राशि का मंगल स्थित हो तब मंगली दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल डतण` ईींतहंअं कि कुण्डली में द्वादश भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डतण` ईींतहंअं कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेणंनीप मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

चतुः सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।

कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा सप्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल डेणंनीप कि कुण्डली में सप्तम् भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डेणंनीप कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र डेणंनीप कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि डतण ` ींतहंअं कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु डतण ` ींतहंअं कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण ` ींतहंअं तथा डेणंनीप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।